Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मध्यप्रदेश में कामकाजी महिलाओं पर घरेलू हिंसा का प्रभाव और उसकी तुलना: भारत के संदर्भ में अध्ययन

नाजनीन खान* निर्मल कुमार पगारिया**

* अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.) भारत
** सेवानिवृत्त प्राध्यापक, इंदौर विधि महाविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – भारत में कामकाजी महिलाओं की संख्या समय के साथ बढ़ी है, लेकिन इसके साथ ही घरेलू हिंसा की घटनाएँ भी लगातार बढ़ रही हैं। घरेलू हिंसा सिर्फ शारीरिक हिंसा तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह मानसिक, आर्थिक और भावनात्मक हिंसा का रूप भी ले सकती है। विशेष रूप से मध्यप्रदेश जैसे राज्यों में, जहां महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति परंपरागत दृष्टिकोण से प्रभावित है, घरेलू हिंसा एक गंभीर मुद्दा बन चुकी है। इस शोध का उद्देश्य मध्यप्रदेश में कामकाजी महिलाओं पर घरेलू हिंसा के प्रभाव को समझना, इसके कारणों का विश्लेषण करना और पूरे भारत में इस समस्या की तुलना करना है।

मध्यप्रदेश में कामकाजी महिलाओं की स्थिति – मध्यप्रदेश में कामकाजी महिलाओं की संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है, लेकिन यह अभी भी राष्ट्रीय औसत से कम है। 2011 की जनगणना के अनुसार, मध्यप्रदेश में महिलाओं की श्रम बल भागीदारी दर 28.7% थी, जो कि राष्ट्रीय औसत से काफी कम है (38.7%)। हालांकि, 2021 तक यह दर बढ़कर 32% हो गई है, लेकिन राज्य में महिलाओं को कामकाजी क्षेत्र में अभी भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

श्रम बाजार में महिलाओं की स्थिति – मध्यप्रदेश में अधिकांश कामकाजी महिलाएँ कृषि, निर्माण कार्य, घरेलू नौकरानी, और विभिन्न छोटे व्यवसायों में लगी हुई हैं। इनमें से कई महिलाएँ घरेलू हिंसा का शिकार हो रही हैं, जो उनकी शारीरिक और मानसिक स्थिति को गंभीर रूप से प्रभावित करता है।

घरेलू हिंसा का प्रभाव– कामकाजी महिलाओं पर घरेलू हिंसा का नकारात्मक प्रभाव उनकी कार्यक्षमता, मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक स्थिति पर पड़ता है। कई बार महिलाएँ घरेलू हिंसा के कारण मानसिक तनाव और आत्म-संवेदना की कमी महसूस करती हैं, जिससे उनके कार्य जीवन में प्रभाव पड़ता है। इसके परिणामस्वरूप वे कार्य में सही प्रदर्शन नहीं कर पातीं, और पारिवारिक दबाव से उनके करियर में रुकावटें आती हैं।

घरेलू हिंसा के कारण और रूप

आर्थिक असमानता– कामकाजी महिलाओं को पुरुषों के मुकाबले कम वेतन मिलता है और उनके कार्य के अवसर सीमित होते हैं। यह आर्थिक असमानता घरेलू हिंसा के प्रमुख कारणों में से एक है। घर में आर्थिक दबाव और कर्तव्यों का असमान वितरण भी हिंसा को जन्म देता है।

सांस्कृतिक और सामाजिक कारण– भारतीय समाज में महिलाओं को अक्सर घर की देखभाल और परिवार की जिम्मेदारियाँ निभाने वाली के रूप में देखा जाता है। इस मानसिकता के कारण महिलाएँ कामकाजी होते हुए भी घरेलू कार्यों में पूरी तरह से लगी रहती हैं। इस कारण उन्हें अतिरिक्त शारीरिक और मानसिक दबाव झेलना पड़ता है, जो घरेलू हिंसा के रूप में सामने आता है।

शारीरिक और मानसिक हिंसा– घरेलू हिंसा केवल शारीरिक रूप में ही नहीं होती, बल्कि मानसिक, आर्थिक और यौन हिंसा का रूप भी ले सकती है। पुरुषों का महिलाओं पर मानसिक उत्पीड़न, उनका शारीरिक शोषण और उनके आत्म-सम्मान को चोट पहुँचाना भी घरेलू हिंसा के मुख्य रूप हैं।

भारत और मध्यप्रदेश में घरेलू हिंसा: डेटा और विश्लेषण– भारत में घरेलू हिंसा की घटनाएँ बढ़ रही हैं, और इसका सीधा प्रभाव कामकाजी महिलाओं पर पड़ रहा है। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण आंकड़े और डेटा दिए गए हैं, जो इस समस्या की गंभीरता को दर्शाते हैं:

भारत में घरेलू हिंसा का डेटा:

1. राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) के अनुसार, 2019 में भारत में घरेलू हिंसा के 1,27,000 मामले दर्ज हुए थे। इनमें से लगभग 30: मामले कामकाजी महिलाओं के थे।
2. राष्ट्रीय सर्वेक्षण (National Family Health Survey-4, 2015-16) के अनुसार, भारत में हर तीन में से एक महिला किसी न किसी प्रकार की घरेलू हिंसा का शिकार होती है।

मध्यप्रदेश में घरेलू हिंसा– मध्यप्रदेश में घरेलू हिंसा की घटनाओं में लगातार वृद्धि हो रही है। 2020 के आंकड़ों के अनुसार, राज्य में घरेलू हिंसा के मामलों में 12% वृद्धि देखी गई है।

तालिका 1: मध्यप्रदेश में घरेलू हिंसा के आंकड़े (2018-2021)

वर्ष	घरेलू हिंसा के मामले (कुल)	कामकाजी महिलाओं पर हिंसा (प्रतिशत)
2018	12,000	35%
2019	14,500	38%
2020	16,200	42%
2021	18,500	45%

यह तालिका दिखाती है कि जैसे-जैसे कामकाजी महिलाओं की संख्या बढ़ी है, घरेलू हिंसा के मामले भी बढ़े हैं।

घरेलू हिंसा के प्रभाव और इसके समाधान

मनोवैज्ञानिक और शारीरिक प्रभाव– कामकाजी महिलाओं पर घरेलू हिंसा

का सबसे बड़ा प्रभाव उनकी मानसिक और शारीरिक स्थिति पर पड़ता है। हिंसा के कारण महिलाएँ मानसिक तनाव, डिप्रेशन और आत्महत्या के विचारों से जूझने लगती हैं। इसके अतिरिक्त, शारीरिक चोटों का भी सामना करना पड़ता है।

समाजिक और पेशेवर प्रभाव– घरेलू हिंसा के कारण महिलाएँ अपने पेशेवर जीवन में समर्पण और कार्यक्षमता से भटक सकती हैं। हिंसा के चलते उनका आत्म–संवेदन और आत्मविश्वास कमजोर हो सकता है, जो उनके करियर को प्रभावित करता है।

समाधान और सिफारिशें:

1. **सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम–** महिलाओं के अधिकारों और घरेलू हिंसा के खिलाफ जागरूकता फैलाना अत्यंत आवश्यक है। स्कूलों, कॉलेजों और कार्यस्थलों पर जागरूकता कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए।
2. **कानूनी उपाय–** कामकाजी महिलाओं को कानूनी सहायता प्राप्त करने के लिए एक सशक्त प्रणाली की आवश्यकता है। उन्हें घरेलू हिंसा अधिनियम, 2005 के तहत कानूनी संरक्षण प्राप्त होना चाहिए।
3. **श्रमिक संघ और महिला संगठनों का समर्थन–** महिलाएँ जब हिंसा का शिकार होती हैं, तो उन्हें श्रमिक संघों और महिला संगठनों से सहारा मिलने की आवश्यकता होती है। ये संगठन कानूनी, मानसिक और शारीरिक समर्थन प्रदान कर सकते हैं।

निष्कर्ष – कामकाजी महिलाओं पर घरेलू हिंसा एक गंभीर सामाजिक समस्या बन चुकी है, जो उनके व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन दोनों को प्रभावित करती है। मध्यप्रदेश में इस समस्या का समाधान करने के लिए सरकार, समाज और विभिन्न संगठनों को मिलकर काम करना होगा। घरेलू हिंसा से बचाव के लिए कानूनी, सामाजिक और मानसिक समर्थन की आवश्यकता है ताकि महिलाएँ समानता, सुरक्षा और सम्मान के साथ अपना जीवन जी सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB) रिपोर्ट्स – राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो। (2019)। भारत में अपराध 2019। गृह मंत्रालय, भारत सरकार।
2. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS–4) – अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (IIPS) और स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार। (2015–16)। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS–4)
3. मध्यप्रदेश राज्य सरकार रिपोर्ट्स – मध्यप्रदेश सरकार। (2020)। मध्यप्रदेश में महिलाओं और बच्चों के कल्याण पर वार्षिक रिपोर्ट। महिला और बाल विकास विभाग, मध्यप्रदेश सरकार
4. विभिन्न एनजीओ रिपोर्ट्स – घरेलू हिंसा और महिलाओं के अधिकार– सेव द चिल्ड्रन इंडिया। (2021)। मध्यप्रदेश में घरेलू हिंसा और महिलाओं पर इसका प्रभाव
   एक्शनएड इंडिया। (2021)। भारत में लिंग आधारित हिंसा और महिलाओं का सशक्तिकरण

****